45H6XT

पाठ – 17

नीति के दोहे

–तुलसी/रहीम/कबीर

नीति के इन दोहों में मीठी वाणी, मुखिया के महत्व, संतोष रूपी धन की महत्ता, परोपकार, कुसंगति का प्रभाव, समय तथा छोटी वस्तुओं की उपयोगिता और 'अति' के दुष्परिणामों को उभारा गया है एवं व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से जीवन मूल्यों पर बल दिया गया है।

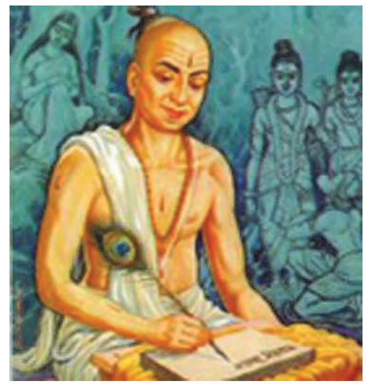

तुलसी मीठे बचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरण यह मंत्र है, परिहरि बचन कठोर ॥

मुखिया मुख सो चाहिए, खान–पान को एक।
पालै–पोसै सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक ॥

आवत हिय हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसैं मेह ॥

तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि–फलहिं पर हेत।
इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत ॥

तुलसी

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरबर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति संचहिं सुजान ॥

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहाँ करै तलवारि ॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन बिष व्यापै नहीं, लिपटे रहत भुजंग ॥

रहिमन निज मन की ब्यथा, मनहीं राखौ गोय।
सुनि इठलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय ॥

रहीम

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब ।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब ।।

माला तौ कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि ।
मनुआ तो चहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं ।।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ।।

दुरलभ मानुष जनम है, देइ न बारंबार ।
तरुबर तैं पत्ता झड़ै, बहुरि न लागै डार ।।

कबीर

शब्दार्थ :– **उपजत** – उत्पन्न होना, **परिहरि** –त्याग करना, परित्याग, **कंचन** –सोना, **मेह**–बादल, **सुअंब** – मीठे आम के पेड़, **पाहन** – पत्थर, **हनत** – मारना, **सरबर** – तलाब, सरोवर, **संचाहि** –इकट्ठा करना, **सुजान** – ज्ञानी, **उत्तम** – बहुत अच्छा, **भुजंग** – सर्प, **व्यथा** – पीड़ा, दर्द, **परलय** – प्रलय, **बहुरि**–पुनः (फिर), **सुमिरन** – याद करना (भजन)।

अभ्यास

पाठ से

1. आम के पेड़ और संत में क्या समानता है?
2. परोपकार के महत्व को रहीम ने किस प्रकार समझाया है?
3. 'उत्तम प्रकृति वाले व्यक्ति कुसंगति से प्रभावित नहीं होते हैं।' इसे समझाइए।
4. 'मनुष्य देह नाशवान है।' इस कथन को कबीर ने कैसे सिद्ध किया है।
5. 'भले लोग हमेशा दूसरों के लिए ही कार्य करते हैं।' रहीम जी ने इस बात को किस तरह समझाया है?
6. मानव के रूप में जन्म को दुर्लभ क्यों बताया गया है?
7. तुलसी ने मीठे वचन को वशीकरण का मंत्र क्यों कहा है?
8. तुलसी के अनुसार हमें कैसे स्थान पर नहीं जाना चाहिए?
9. आज का काम कल पर क्यों नहीं टालना चाहिए?
10. निम्नलिखित दोहों के अर्थ स्पष्ट कीजिए –

    क. तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि–फलहिं पर हेत।
    इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत।।

    ख. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
    चंदन विष व्यापै नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।

पाठ से आगे

45R2ZG

1. 'अपने मन की व्यथा दूसरों को भी बतानी चाहिए या अपने मन में ही रखनी चाहिए।' अपने विचार कारण सहित लिखिए।
2. तुलसीदास जी के अनुसार 'मुखिया को मुख के समान होना चाहिए।' आपके अनुसार घर के मुखिया में कौन–कौन से गुण होने चाहिए और क्यों?
3. हमें बोलते या बातचीत करते समय किन बातों/चीजों का ध्यान रखना चाहिए।

भाषा से

45ZY24

1. नीचे वाक्यों के कुछ जोड़े दिए गए हैं। उन्हें देखिए –

(i) हम आप से कहे थे।
(ii) हमने आप से कहा था।

(i) एक फूल की माला दो।
(ii) फूलों की एक माला दो।

(i) मैं गर्म गाय का दूध पीता हूँ।
(ii) मैं गाय का गर्म दूध पीता हूँ।

यहाँ हर जोड़े के पहले वाक्य में अशुद्धि है, जिसे सुधार कर दूसरे वाक्य में लिखा गया है। जानकारी के आभाव में वाक्य रचना में कई प्रकार की अशुद्धियाँ आ सकती हैं। ये अशुद्धियाँ वचन, लिंग, विभक्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, मुहावरे, क्रिया विशेषण, पदक्रम, पुनरूक्ति तथा शब्दों से संबंधित हो सकती हैं। नीचे कुछ अशुद्ध वाक्य दिए जा रहे हैं। उनमें अशुद्धि को पहचानिए और शुद्ध कर के लिखिए–

(1) उसने अनेकों ग्रथ लिखे।
(2) वह धीमी स्वर में बोला।
(3) मैं यह काम नहीं किया हूँ।
(4) में रविवार के दिन जाऊँगा।
(5) गीता आई और कहा।
(6) वह श्याम पर बरस गया।
(7) उसे भारी दुख हुआ।
(8) मैं दर्शन देना आया था।
(9) इस क्षेत्र में सर्वस्व शांति है।
(10) मैनें ग्रहकार्य नहीं किया है।
(11) वह बेफिजूल की बातें करता है।
(12) यहाँ नहीं रूको।

2. **इन वाक्यों को देखिए –**

(i) 'तीर' एक <u>अस्त्र</u> है।
(ii) तलवार एक <u>शस्त्र</u> है।
(ii) 'बाईबिल' एक <u>ग्रंथ</u> है।
(ii) हिन्दी की <u>पुस्तक</u> दो।

शब्दों के इन जोड़ों में रेखांकित शब्द एक समान अर्थ देने वाले माने जाते हैं परंतु वास्तव में उनके अर्थ

और प्रयोग में सूक्ष्म अंतर होता है। ऐसे शब्दों को 'सूक्ष्म अर्थभेदी शब्द कहते हैं। इस प्रकार के शब्द समानार्थी प्रतीत होते हुए भी भिन्न अर्थ प्रगट करते हैं। नीचे कुछ सूक्ष्म अर्थ–भेदी शब्दों के जोड़े दिए गए है। आप उनका वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनमें अंतर स्पष्ट हो जाए–

(1) अनिवार्य	– आवश्यक	(2) गहरा	– घना
(3) आज्ञा	– आदेश	(4) प्रणाम	– नमस्कार
(5) कठिन	– कठोर	(6) वध	– हत्या
(9) अमूल्य	– बहुमूल्य	(10) छाया	– परछाई

3. 1. हमने कल कबड्डी खेला।
   2. हम कबड्डी खेल रहे हैं।
   3. हम कबड्डी खेलेंगे।

उपर्युक्त वाक्यों में 'खेला', खेल रहे हैं' और 'खेलेंगे' तीनों क्रियाएँ हैं जो अलग–अलग समय में कार्य के होने का बोध करवा रही हैं। क्रिया का वह रूप जिससे उसके होने या करने के समय का पता चले, काल कहलाता है। काल के तीन भेद हैं–

1. भूतकाल :– क्रिया बीते समय में हुए कार्य का बोध कराती है। (उदा. हमने पाठ पढ़ लिया था।)
2. वर्तमान :– क्रिया वर्तमान में चल रहे कार्य का बोध कराती है। (उदा. हम पाठ पढ़ रहे हैं।)
3. भविष्य :– क्रिया भविष्य में होने वाले कार्य का बोध कराती है। (उदा. हम पाठ पढ़ेंगे।)

नीचे दिए गए वाक्यों का काल पहचान कर लिखिए –

1. शायद चोर पकड़ा जाए।
2. पुजारी पूजा करता है।
3. मोहन आया।
4. वह देखता है।
5. रीता रो रही थी।
6. दीपक अखबार बेचेगा।
7. मै पढ़ रहा हूँ।
8. वह आए तो मैं जाऊँ।
9. मैं अभी सोकर उठी हूँ।
10. किसान बाजार जा रहा होगा।
11. वह पढ़ता होगा।
12. बस छूट गयी होगी।
13. यदि वर्षा होती तो छतरी बिकती।
14. संभव है कि वह लौटा हो।
15. महादेवी जी ने संस्मरण लिखे।

4. निम्नलिखित के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

सॉंप, सोना, पेड़, सरोवर, तलवार।

5. नीचे लिखे शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

सनेह / मेह / धूरि / रतन / तरवारि / परलय / दुरलभ / जनम / हरष।

6. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए–

कठोर, विवेक, हर्ष, संतोष, हित, परमार्थ, लघु।

योग्यता विस्तार

1. कक्षा में अध्यापक के मार्गदर्शन में दोहा अंत्याक्षरी का आयोजन कीजिए।
2. कबीर दास जी, अब्दुर्रहीम खानखाना तथा गोस्वामी तुलसीदास का जीवन परिचय खोज कर पढ़िए।
3. सूरदास और रसखान की कुछ रचनाओं को खोजकर कक्षा में सुनाइए।
4. मीठी वाणी एवं सत्संगति के महत्व से संबंधित दोहों का संकलन कीजिए।

469U3R